17 जुलाई 2009, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

सर्व समाधान कारक तो अपना आत्मा ही है, जो स्वयं ज्ञानस्वरूप है।

ह्न बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ-21

वर्ष : 32, अंक : 8 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जुलाई (द्वितीय), 2009 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

82 स्थानों पर एकसाथ बाल संस्कार ग्रुप शिविर

भिण्ड (म.प्र.) : श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट देवनगर भिण्ड एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा देवनगर भिण्ड के संयुक्त तत्त्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय मुमुक्षु महासंघ, देवलाली के विशेष सहयोग तथा बाल ब्र. पण्डित रविन्द्रजी अमायन एवं बाल ब्र. पण्डित सुमतप्रकाशजी खनियांधाना की प्रेरणा व मार्गदर्शन में पाँचवा सामूहिक बाल संस्कार शिक्षण शिविर एकसाथ 82 स्थानों पर दिनांक 31 मई से 11 जून 2009 तक सम्पन्न हुआ।

शिविर का उद्घाटन श्री ब्रजसेनजी दिल्ली एवं झण्डारोहण श्री वीरेन्द्रजी जैन रानीपुरवालों के करकमलों से हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री आलोकजी जैन कानपुर, श्री अरविन्दजी जैन भिण्ड व विशिष्ट अतिथि श्री जिनेन्द्रजी जैन मौ, श्री सुनीलजी जैन ग्वालियर, श्री दीपकजी जैन शहादरा आदि मंचासीन थे। इस अवसर पर किट का विमोचन श्री रतीभाई मुंबई ने किया।

शिविर में श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन मंगलायतन, श्री अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाडा, श्री नंदीश्वर विद्यापीठ खनियांधाना, श्री कुन्दकुन्द विद्या निकेतन सोनागिर आदि स्थानों के कुल 172 विद्वानों की टीम के द्वारा विभिन्न शहरों एवं गांव के बच्चों व श्रावक-श्राविकाओं को जैनधर्म के मुख्य बिन्दुओं के माध्यम से धार्मिक संस्कार दिये गये।

इस बृहद ज्ञान यज्ञ के अंतर्गत भिण्ड जिले के 16, ग्वालियर जिले के 9, मुरैना जिले के 2, शिवपुरी जिले के 10, ललितपुर जिले के 12, इटावा जिले के 9, फिरोजाबाद जिले के 9, मैनपुरी जिले के 4, सागर जिले के 3 तथा इन्दौर जिले के 8 ह्न इसप्रकार कुल 82 स्थानों पर शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। लगभग सभी स्थानों पर प्रतिदिन प्रात: पूजन, प्रवचन, बाल कक्षायें, जिनेन्द्र भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुये।

इस सामूहिक बाल संस्कार शिविर में ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित विनीतजी शास्त्री ग्वालियर, पण्डित नागेशजी जैन पिड़ावा, श्री सुरेशजी जैन अटेर रोड, श्री बुद्धसेन जैनभिण्ड, श्री नरेशजी जैन जसवंत नगर, श्री दीपक जैन भिण्ड, श्री विवेक जैन भिण्ड आदि ने विभिन्न स्थानों पर जाकर शिविरों का निरीक्षण एवं व्यवस्थाओं का अवलोकन किया।

शिविर का भव्य समापन समारोह श्री सीमंधर जिनालय, देवनगर भिण्ड में दिनांक 11 जून 2009 को किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री अशोककुमारजी जैन भिण्ड ने की। मुख्य अतिथि श्री पारसजी जैन-जिला मजिस्ट्रेट-भिण्ड, विशिष्ट अतिथि श्री ऐ. के. जैन-विद्युत मंडल भिण्ड, श्री गजेन्द्रजी जैन, श्री सतीशचंद्रजी जैन भिण्ड के अतिरिक्त सभी विद्वत्जन मंचासीन थे।

इस समय स्थानीय स्तर पर विभिन्न कक्षाओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करनेवाले बालकों को पुरस्कार देकर उनका उत्साहवर्धन किया गया। पुरस्कार वितरणकर्त्ता श्री राजीवजी जैन शास्त्री भिण्ड थे।

82 स्थानों पर लगे इस बृहद सामूहिक शिविर में लगभग 25 हजार साधर्मियों एवं बालक-बालिकाओं ने ज्ञानगंगा में स्नान किया।

ह्न डॉ. सुरेशचन्द जैन, भिण्ड

दशलक्षण पर्व के संदर्भ में

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु हमारे पास अनेक स्थानों से आमंत्रण-पत्र प्राप्त हो रहे हैं, जिन्होंने अभी तक आमंत्रण नहीं भेजा है, वे अपना आमंत्रण कृपया फैक्स या ई-मेल से शीघ्र भेजें।

दशलक्षण पर्व पर प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों को अपनी स्वीकृति भेजने हेतु पत्र भेजे गये थे, एतदर्थ जिन विद्वानों ने अभी तक अपनी स्वीकृति नहीं भेजी है, वे कृपया अपनी स्वीकृति शीघ्र भेजें।

ह्न मंत्री, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

फैक्स (0141) 2704127, E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com

सम्पादकीय –

चलते-फिरते सिद्धों से गुरु (32)

(गतांक से आगे ...) ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

वैराग्य जननी बारह भावनाओं पर सरल सुबोध शैली में हुए पूर्व प्रवचनों को सुनकर श्रोताओं में दिन-प्रतिदिन रुचि और उत्साह बढ़ रहा था। इसकारण श्रोता आज समय के पूर्व ही आ बैठे थे। आज उपाध्यायश्री का प्रवचन होना था। अतः ये यथा समय पधार गये और प्रवचन प्रारंभ करते हुए उन्होंने पूर्व में हुए बारह भावनाओं के विषय को ही आगे बढ़ाते हुए एक-एक भावना का विस्तार से समझाना प्रारंभ किया।

१. अनित्यानुप्रेक्षा का स्पष्टीकरण करते हुए उन्होंने कहा ह्न ''इस भावना में साधक ऐसा विचार करता है कि ह्न 'एक आत्मा ही नित्य है, संयोग सब अनित्य हैं। शरीर और शरीर से संबंधित धन, स्त्री, पुत्र आदि सब अनित्य हैं। पानी के बुलबुले की भाँति क्षणभंगुर हैं।' इस भावना के चिन्तन से धन-वैभव, पति-पत्नी, पुत्र-मित्र आदि अनुकूल संयोगों का वियोग होने पर दुःख नहीं होता। वे भोगों को जूठे भोजन के समान त्याग देते हैं तथा अविनाशी निज परमात्मा को भेद-अभेद रत्नत्रय की भावना द्वारा भाते हैं। इसप्रकार वे जैसी अविनश्वर आत्मा को भाते हैं; वैसी ही अक्षय, अनन्त सुखस्वभाववाली मुक्त दशा को वे प्राप्त कर लेते हैं। इसप्रकार के चिन्तन का नाम अध्रुव भावना है।[१]''

२. अशरणानुप्रेक्षा ह्न अशरणानुप्रेक्षा को समझाते हुए कहा है कि ह्न निश्चय से निज शुद्धात्मा की शरणता तथा व्यवहार से पंच परमेष्ठी की शरणता का और संयोगों की अशरणता का चिन्तन करना अशरणानुप्रेक्षा है। उदाहरणार्थ देखे निम्नांकित छन्द ह्न

''शुद्धातमअरु पञ्चगुरु, जग में सरनौ दोय।
मोह उदय जिय के वृथा, आन कल्पना होय।।

निश्चय से शुद्धात्मा और व्यवहार से पंचपरमेष्ठी शरणभूत हैं। अज्ञानी जीव मोहवश इनसे अन्य धन, स्त्री, पुत्र, परिवार और राज-पाट को शरण मानकर उनकी शरण खोजते हैं।[२]''

संसार में अपनी आत्मा के सिवाय अपना और कोई रक्षा करनेवाला नहीं है। वह स्वयं ही कर्मों को खिपाकर जन्म, जरा, मरणादि के कष्टों से बच सकता है। आत्मा को सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र ही परम शरण हैं। संसार में भ्रमण करते हुए जीवों को दुःख से बचने के लिए इनके सिवाय अन्य कुछ भी शरण नहीं हैं।

निश्चयरत्नत्रय से परिणत शुद्धात्मद्रव्य और उसकी बहिरंग सहकारी कारणभूत पंचपरमेष्ठियों की आराधना ह्न ये दोनों ही शरणभूत हैं; इनसे भिन्न देव, इन्द्र, चक्रवर्ती, सुभट, कोटिभट और पुत्रादि चेतन पदार्थ तथा मंत्र-तंत्र और औषध आदि अचेतन पदार्थ शरणभूत नहीं हैं।

अनित्य व अशरण भावना में अन्तर बताते हुए कहा है कि अनित्य भावना में संयोगों और पर्यायों के अनित्य स्वभाव का चिन्तन होता है और अशरण भावना में उनके ही अशरण स्वभाव का चिन्तन होता है, जिसप्रकार अनित्यस्वभाव के कारण प्रत्येक वस्तु परिणमनशील है, नित्य परिणमन करती है; उसीप्रकार अशरण स्वभाव के कारण किसी वस्तु को अपने परिणमन के लिए पर की शरण में जाने की आवश्यकता नहीं है। पर की शरण की आवश्यकता परतंत्रता की सूचक है, जबकि प्रत्येक वस्तु पूर्णतः स्वतंत्र स्वयं अपने लिए ही शरणभूत है।

व्यवहार से अनित्य भावना का केन्द्रबिन्दु है ह्न 'मरना सबको एक दिन, अपनी अपनी बार' और अशरण भावना का केन्द्रबिन्दु ह्न 'मरतैं न बचावे कोई' ह्न यही इन दोनों का मूलभूत अन्तर है।

जिसप्रकार क्षुधित और मांस के लोभी बलवान व्याघ्र के द्वारा दबोचे गये मृगशावक के लिए कोई भी शरण नहीं होता; उसीप्रकार जन्म, जरा, मृत्यु और व्याधि आदि दुःखों के मध्य में परिभ्रमण करनेवाले जीव को कोई भी शरण नहीं है। यत्न से संचित किया हुआ धन भी भवान्तर में साथ नहीं जाता। सुख-दुःख के मित्र भी मरण के समय रक्षा नहीं कर सकते। बन्धुजन भी रोगों से घिरे जीव की रक्षा करने में असमर्थ होते हैं। एकमात्र वीतराग धर्म ही शरण है। अन्य कुछ भी शरण नहीं है; इसप्रकार की भावना करना अशरणानुप्रेक्षा है।

एक श्रोता विनयपूर्वक पूछता है ह्न ''अशरणानुप्रेक्षा में पंचपरमेष्ठी एवं धर्म को शरण कहा गया है तो क्या मृत्युकाल आने पर वे इसे बचाते हैं?''

उपाध्यायश्री ने कहा ह्न ''भाई ! पंचपरमेष्ठी अथवा धर्म की शरण का आशय यह नहीं है कि वे मृत्युकाल अथवा रोगादि का अभाव कर देते हैं और न ज्ञानियों द्वारा इस उद्देश्य से उनकी शरण अंगीकार की जाती है। बात इतनी-सी है कि पंचपरमेष्ठी अथवा निज शुद्धात्मा के आश्रय से मृत्युकाल अथवा रोगादि की दशा में होनेवाले आकुलता-व्याकुलतारूप आर्तपरिणाम नहीं होते, यही उनकी शरण का प्रयोजन भी है। मरण अथवा रोगादिरूप अवस्था तो जब, जैसी होनी है, होकर ही रहती है; उसे टालने में तो इन्द्र, अहमिन्द्र और जिनेन्द्र भी समर्थ नहीं है।

अशरण भावना का मूल प्रयोजन संयोगों और पर्यायों की अशरणता का ज्ञान कराकर दृष्टि को वहाँ से हटाकर स्वभाव-सन्मुख ले जाना है। इसी प्रयोजन की सिद्धि के लिए संयोगों और पर्यायों को अशरण बताया जाता है और इसी प्रयोजन की सिद्धि के लिए शुद्धात्मा और पंचपरमेष्ठी को शरणभूत या परम शरण बताया जाता है।

१. बृहद्द्रव्यसंग्रह टीका गाथा ३५ २. पण्डित जयचन्द छाबड़ा

निज आत्मा ही शरण है; उसके अतिरिक्त अन्य कोई शरण नहीं है। कोई जीव अन्य जीव की रक्षा करने में समर्थ नहीं है, इसलिए पर से रक्षा की आशा करना व्यर्थ है। सर्वत्र–सदैव एक निज आत्मा ही अपना शरण है। आत्मा निश्चय से मरता ही नहीं, क्योंकि वह अनादि–अनन्त है; ऐसा स्वोन्मुखतापूर्वक चिन्तवन करके सम्यग्दृष्टि जीव वीतरागता की वृद्धि करता है, यह अशरण भावना है।''

३. संसारानुप्रेक्षा समझाते हुए आचार्यश्री ने कहा है ''चतुर्गति परिभ्रमणरूप दु:खों के एवं पंच–परावर्तनरूप संसार के दु:खों के चिन्तन पूर्वक संसार की असारता तथा निज ज्ञानानन्द स्वभावी आत्मा का साररूप चिन्तन करना संसार अनुप्रेक्षा है।''

छहढाला में कहा है कि है

चहुँगति दुख जीव भरे हैं, परिवर्तन पंच करैं हैं।
सब विधि संसार असारा, यामे सुख नाहिं लगारा।।'

बारसाणुवेक्खा गाथा २४ में कहा है कि 'यह जीव जिनमार्ग की ओर ध्यान नहीं देता हुआ जन्म, जरा, मरण, रोग और भय से भरे हुए पंचपरावर्तन रूप संसार में अनादिकाल से भटक रहा है है ऐसा विचार कर जिनमार्ग में कहे आत्मा के स्वरूप का चिन्तन करना चाहिए।'

पूज्यपादस्वामी ने जो कहा उसका सार यह है कि है 'कर्म–विपाक के वश से आत्मा को भवान्तर की प्राप्ति होना संसार है। उसका पाँच प्रकार के परिवर्तनरूप से व्याख्यान होता है। उसमें अनेक योनियों और लाखों–करोड़ों कुलों से व्याप्त उस संसार में परिभ्रमण करता हुआ यह जीव कर्मयंत्र से प्रेरित होकर स्वयं का ही पिता, भाई, पुत्र और पौत्र हो जाता है; माता, भगिनी, भार्या और पुत्री हो जाती है; स्वामी दास हो जाता है तथा दास स्वामी हो जाता है। जिसप्रकार रंगस्थल में नट नानारूप धारण करता है, उसीप्रकार यह जीव भी नाना योनियों में जन्म–मरण करता है। बहुत कहने से क्या प्रयोजन, स्वयं अपना पुत्र भी हो जाता है। इत्यादि रूप से संसार के स्वभाव का चिन्तन करना संसारानुप्रेक्षा है।'

कार्तिकेयानुप्रेक्षा गाथा ७३ में कहा है कि 'हे जीव ! इस संसार का स्वरूप जानकर और सम्यक् व्रत आदि समस्त उपायों से मोह को त्यागकर अपने शुद्ध ज्ञानमय स्वरूप का ध्यान करो, इससे संसार परिभ्रमण का अभाव होता है।'

४. एकत्वानुप्रेक्षा में कहा है कि है 'संसार के भयंकर दु:खों को मैं अकेला ही भोगता हूँ; न कोई मेरा स्व है और न कोई पर है; अकेला ही मैं जन्मता हूँ, अकेला ही मरता हूँ; मेरा कोई भी स्वजन या परिजन, व्याधि, जरा और मरण आदि के दु:खों को दूर नहीं करता; बन्धु और मित्र श्मशान से आगे नहीं जाते। बस ! धर्म ही मेरा कभी साथ न छोड़ने वाला नित्य सहायक है। इसप्रकार चिन्तवन करना एकत्वानुप्रेक्षा है।'

समयसार, वृहद्द्रव्यसंग्रह टीका, बारसाणुवेक्खा आदि आध्यात्मिक ग्रन्थों में निश्चय से आत्मा के अनन्त गुणात्मक एकत्व स्वरूप को आधार बनाकर एकत्वभावना का विचार किया गया है, जबकि सर्वार्थसिद्धि, मूलाचारप्रदीप, भगवती आराधना आदि ग्रन्थों में एकत्व भावना के व्यावहारिक पक्ष को प्रगट किया गया है।

निश्चयनयपरक एकत्वानुप्रेक्षा का स्वरूप बताते हुए कहा है कि 'मैं एक हूँ, ममतारहित हूँ, शुद्ध हूँ और ज्ञान–दर्शनस्वरूप हूँ, इसलिए शुद्ध एकपना ही उपादेय है है ऐसा निरन्तर चिन्तवन करना चाहिए।

एकत्वनिश्चय को प्राप्त समय ही लोक में सब जगह सुन्दर है; एकत्व में दूसरे के साथ बन्ध की कथा विसंवाद–विरोध करनेवाली है। इसलिए एक आत्मा का ही आश्रय लेने योग्य है।[१]''

'परमारथ तैं आत्मा, एक रूप ही जोय।
मोह निमित्त विकलप घने, तिन नासे शिव होय।।

एकत्व भावना में कहा है कि यह आत्मा अकेला ही शुभाशुभ कर्म बाँधता है, अकेला ही दीर्घ संसार में भ्रमण करता है, अकेला ही उत्पन्न होता है, अकेला ही मरता है, अकेला ही अपने कर्मों का फल भोगता है, अन्य कोई इसका साथी नहीं है।[२]''

'जीव तू भ्रमत सदैव अकेला, संग साथी नहीं कोई तेरा।
अपना सुख–दु:ख आपहि भुगते, होत कुटुम्ब न भेला।
स्वार्थ भयैं सब बिछरि जात हैं, विघट जात ज्यों मेला।।
।। जीव तू 0।।

जीवन–मरण, सुख–दु:ख आदि प्रत्येक स्थिति को जीव अकेला ही भोगता है, किसी भी स्थिति में किसी का साथ सम्भव नहीं है। वस्तु की इसी स्थिति का चिन्तन एकत्व भावना में गहराई से किया जाता है।[३]'

एक बात और भी है कि इस दु:खमय संसार में कहने के साथी तो बहुत मिल जायेंगे, पर सगा साथी – वास्तविक साथी कोई नहीं होता; क्योंकि वस्तुस्थिति के अनुसार कोई किसी का साथ दे नहीं सकता।

एकत्वानुप्रेक्षा का प्रयोजन बताते हुए कहा है कि 'एकत्वानुप्रेक्षा का चिन्तवन करते हुए इस जीव का स्वजनों में प्रीति का अनुबंध नहीं होता और परजनों में द्वेष का अनुबंध नहीं होता; इसलिए वह जीव नि:संगता को प्राप्त होकर मोक्ष के लिये ही प्रयत्न करता है।'

पूरे प्रयत्न से शरीर से भिन्न एक जीव को जानो। उस जीव को जान लेने पर क्षण–भर में ही शरीर, मित्र, स्त्री, धन, धान्य, वगैरह सभी वस्तुएँ हेय हो जाती हैं। **(क्रमश:)**

---

१. समयसार गाथा ७३ २. पण्डित जयचन्दजी छाबड़ा
३. पण्डित भागचन्द

अष्टान्हिका महापर्व सानन्द सम्पन्न

१. रतलाम (म.प्र.) : श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय में अष्टान्हिका पर्व के अवसर पर विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिदिन प्रात: अभिषेक के पश्चात् रत्नत्रय मण्डल विधान की सामूहिक पूजन पण्डित कान्तिकुमारजी जैन इन्दौर द्वारा सम्पन्न कराई गई।

इस अवसर पर डॉ. उत्तमचंदजी जैन सिवनी के प्रात: समयसार पर एवं रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक पर रोचक व सरल शैली में व्याख्यानों से मुमुक्षु समाज लाभान्वित हुआ। व्याख्यान के पश्चात् पण्डित निशांत जैन ने जैन सिद्धान्त प्रवेशिका की कक्षा ली।

कार्यक्रमों में स्थानीय समाज के अतिरिक्त जावरा, खाचरोद, बड़नगर, इन्दौर, उदयपुर, वापी आदि स्थानों के श्रद्धालुओं ने भी धर्मलाभ लिया।

आयोजन के मध्य दिनांक 4 जुलाई को वीतराग–विज्ञान पाठशाला रतलाम के सभी उत्तीर्ण विद्यार्थियों को प्रमाण–पत्र एवं पारितोषिक वितरित किये गये। कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित पदमचंदजी अजमेरा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. उत्तमचंदजी जैन सिवनी एवं पण्डित कान्तिकुमारजी जैन इन्दौर मंचासीन थे।

२. दिल्ली : अध्यात्मतीर्थ आत्म साधना केन्द्र पर आषाढ़ माह की अष्टान्हिका पर्व के पावन प्रसंग पर रविवार दिनांक 28 जून से रविवार दिनांक 5 जुलाई 2009 तक श्री पंचमेरु नन्दीश्वर मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर विधि–विधान के सम्पूर्ण कार्यक्रम बाल ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के कुशल निर्देशन में पण्डित मधुवनजी शास्त्री मुजफ्फरनगर, पण्डित संदीपजी शास्त्री बासंवाडा, पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली ने सम्पन्न कराये।

इस मंगलमय प्रसंग पर पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, विदुषी राजकुमारीजी दिल्ली, पण्डित संजीवजी शास्त्री बारां आदि विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

प्रतिदिन विधान, प्रवचन, कक्षा के साथ–साथ आत्मार्थी कन्या विद्यानिकेतन की बालिकाओं का प्रवचन एवं उन्हीं के द्वारा ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों का संचालन भी किया गया। विधान के मुख्य आमंत्रणकर्ता श्री रहतुमलजी नरेन्द्रकुमारजी जैन परिवार, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली थे।

३. कोटा (राज.) : श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा कोटा के तत्त्वावधान में कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन, रामपुरा में अष्टान्हिका महापर्व पर ब्र. नन्हे भैया सागर का एवं श्री सीमंधर जिनालय, इन्द्रविहार में पण्डित मनोजजी जैन जबलपुर का मंगल सान्निध्य मिला। दोनों ही स्थानों पर प्रात: सामूहिक जिनेन्द्र पूजन व समयसार पर प्रवचन एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक के आधार से वैराग्यमयी प्रवचनों का लाभ मिला। श्री सीमंधर जिनालय इन्द्रविहार में पण्डित मनोजजी ने युवाओं को पूजन प्रशिक्षण एवं उसके बारे में प्रेरणा दी।

४. भीण्डर (राज.) : श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय भीण्डर में स्थानीय समाज एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में अष्टान्हिका महापर्व के अवसर पर दिनांक 30 जून से 7 जुलाई 2009 तक तीन लोक मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

प्रतिदिन प्रात: अभिषेक, पूजन–विधान का कार्यक्रम होता था। दोपहर में मोक्षशास्त्र विषय पर महिला वर्ग की कक्षा पण्डित संदीपजी शास्त्री बडकुल ने ली। सायंकाल पण्डित संदीपजी बडकुल एवं पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री द्वारा दो कक्षायें ली गई।

इस अवसर पर पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा के क्रिया–परिणाम–अभिप्राय विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये।

५. खतौली (उ.प्र.) : यहाँ भगीरथजी वर्णी द्वारा स्थापित श्री 1008 पद्मप्रभ दिगम्बर जिनमंदिर में अष्टान्हिका महापर्व के पावन अवसर पर **श्री पंचमेरु नंदीश्वर महामंडल विधान** का आयोजन बडी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। विधान का आचार्यत्व श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित वीरेन्द्रजी जैन बक्स्वाहा एवं पण्डित दीपकजी जैन भिण्ड ने किया।

इस अवसर पर पण्डित कोमलचंदजी जैन द्रोणगिरी के दोनों समय समयसार एवं मोक्षमार्ग प्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला।

विधान के मध्य अन्तिम पाँच दिन 108 श्री आचार्य भरतभूषणजी महाराज द्वारा आशीर्वचन का विशेष लाभ मिला।

विधान के सम्पूर्ण कार्यक्रम स्थानीय विद्वान पण्डित सोनूजी शास्त्री फिरोजाबाद के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुये।

६. खतौली (उ.प्र.) : श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पीसनोपाड़ा में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा खतौली द्वारा **श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान** का आयोजन किया गया।

विधान में आठ दिनों तक आचार्य 108 श्री भरतभूषणजी महाराज द्वारा महती धर्म प्रभावना हुई।

विधि–विधान के सम्पूर्ण कार्य जयपुर से पधारे पण्डित एकत्वजी शास्त्री खनियांधाना एवं पण्डित दीपेशजी शास्त्री ने सम्पन्न कराये। रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति एवं समयसारजी पर प्रवचन हुये।

७. अजमेर (राज.) : यहाँ श्री वीतराग–विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री सीमन्धर जिनालय में अष्टान्हिका महापर्व के पावन अवसर पर दिनांक 29 जून से 7 जुलाई तक 170 तीर्थंकर विधान का आयोजन रखा गया। इस अवसर पर पण्डित कमलचंदजी ने नियमसार के माध्यम से पंचरत्न की गाथाओं द्वारा जीव के स्वरूप का ज्ञान कराया।

सम्पूर्ण विधि–विधान व कार्यक्रमों का संचालन पण्डित अश्विनजी नानावटी द्वारा किया गया। आयोजन में श्री मनोजजी कासलीवाल ट्रस्ट मंत्री व युवा प्रकोष्ठ आदि का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। **ह्न प्रकाश पाण्ड्या**

जैन बाल संस्कार ग्रुप शिविर सम्पन्न

उदयपुर (राज.) : श्री कुन्दकुन्द कहान वीतराग–विज्ञान शिक्षण समिति, उदयपुर द्वारा 21 स्थानों पर जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन दिनांक 14 जून से 21 जून 2009 तक किया गया।

उदयपुर के श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय मुमुक्षु मण्डल, प्रभात नगर–हिरणमगरी, केशवनगर, नेमिनाथ कॉलोनी–हिरणमगरी सेक्टर–3, आदर्श नगर–गायरियावास, हिरणमगरी सेक्टर–11 में एवं डबोक, वल्लभनगर, भीण्डर, कानोड, लूणदा, लकडवास, साकरोदा, कुराबड, जगत, सेमारी, चितौडगढ, डूंगरपुर में तीन स्थान ह्न इसप्रकार कुल 21 स्थानों पर शिविर लगाये गये। लगभग सभी स्थानों पर बाल कक्षाओं के अतिरिक्त युवा वर्ग की तत्त्वार्थसूत्र के प्रथम अध्याय एवं छहढाला की कक्षा ली गई। रात्रि में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न कराए गये। सभी स्थानों पर अन्त में परीक्षाएं लेकर पुरस्कार वितरित किए गए।

शिविर में पण्डित खेमचंदजी, पण्डित रीतेशजी, पण्डित प्रक्षालजी, पण्डित जिनेन्द्रजी, पण्डित दीपकजी, पण्डित अमोलजी, पण्डित संदीपजी, पण्डित तपीशजी, पण्डित सनतजी, पण्डित गजेन्द्रजी, पण्डित जयेशजी, पण्डित सुमितजी, पण्डित अनेकान्तजी, पण्डित मेघवीरजी, पण्डित अतुलजी, पण्डित प्रीतमजी, पण्डित नीरजजी, पण्डित वीरेन्द्रजी, पण्डित रोहितजी, पण्डित जयदीपजी, पण्डित चेतनजी, पण्डित धवलजी, पण्डित शैलेशजी, पण्डित अभिषेकजी, पण्डित अर्पितजी आदि शास्त्री विद्वानों द्वारा प्रवचन एवं कक्षाओं के रूप में सहयोग मिला।

निरीक्षण दल समिति के संयोजक डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री एवं समिति के अध्यक्ष कन्हैयालालजी दलावत द्वारा प्रत्येक स्थान पर निरीक्षण किया गया।

शिविर में कुल 547 छात्रों ने परीक्षाएं दी तथा 700 युवा व प्रौढ व्यक्तियों ने प्रवचन व कक्षा का लाभ लिया। सभी स्थानों के शिविरों की सफलता में श्री टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर एवं श्री अकलंक महाविद्यालय बांसवाडा के विद्यार्थियों का सहयोग रहा।

कार्यक्रम का सफलतम संचालन व संयोजक डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री, उदयपुर ने किया। **ह्न कन्हैयालाल दलावत**

19 वाँ शिविर सानन्द सम्पन्न

अजमेर (राज.) : यहाँ श्री सीमन्धर जिनालय में श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट, अजमेर के तत्त्वावधान में गत् 18 वर्षों से निरन्तर आयोजित ग्रीष्मकालीन बाल व युवा चेतना शिविर का 19 वाँ भव्य आयोजन दिनांक 17 जून से 26 जून 2009 तक सान्नद सम्पन्न हुआ।

प्रतिदिन पूजन–विधान के मध्य स्थायी विद्वान पण्डित अश्विनजी नानावटी, बांसवाडा एवं पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा द्वारा पूजन के संबंध में मार्मिक जानकारी दी जाती थी ।

इन्हीं दोनों विद्वानों द्वारा प्रात: सामूहिक बाल कक्षा, बालबोध भाग 1, 2, 3 की कक्षा, सायं भक्ति व बाल कक्षा व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता था। इसी बीच पिडावा से पधारे पण्डित कमलचंदजी जैन द्वारा युवाओं के लिये मोक्षशास्त्र व मोक्षमार्ग प्रकाशक की कक्षा ली गई।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन ह्न

राज. प्रदेश का कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण सम्पन्न

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का राजस्थान प्रदेश का द्वितीय कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण सम्मेलन रविवार, दिनांक 12 जुलाई को अकलंक पब्लिक स्कूल, रामपुरा, कोटा में आयोजित किया गया।

प्रात: पूजन एवं प्रवचन के उपरान्त प्रशिक्षण का प्रथम सत्र प्रारंभ हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि फैडरेशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री प्रेमचन्दजी बजाज थे। समारोह की अध्यक्षता राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय उदयपुर की हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. मंजू चतुर्वेदी ने की।

मुख्य वक्ता फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल के अतिरिक्त विशिष्ट अतिथि के रूप में मुमुक्षु मण्डल कोटा के अध्यक्ष श्री ज्ञानचन्दजी जैन, फैडरेशन के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री पीयूषजी शास्त्री जयपुर, प्रदेशाध्यक्ष डॉ. उत्तमचन्दजी भारिल्ल मुम्बई, प्रदेश महासचिव श्री राजकुमारजी जैन दर्शनाचार्य बांसवाड़ा, प्रांतीय उपाध्यक्ष पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री अलवर, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित रतनचन्दजी शास्त्री कोटा एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर मंचासीन थे।

इस सत्र में मुख्यवक्ता के रूप में बोलते हुये फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने फैडरेशन की उपयोगिता एवं वर्तमान परिप्रेक्ष में फैडरेशन की प्रासंगिकता और उसकी आवश्यकता पर जोर दिया।

इस सत्र में उदयपुर जिले के कार्यकर्त्ताओं का परिचय डॉ. महावीरप्रसादजी जैन ने, अलवर संभाग के कार्यकर्ताओं का परिचय अलवर शाखा के अध्यक्ष श्री शशिभूषणजी जैन ने, जयपुर महानगर शाखा के कार्यकर्त्ताओं का परिचय अध्यक्ष श्री संजयजी सेठी ने, कोटा संभाग के कार्यकर्ताओं का परिचय संभागीय महामंत्री श्री जयकुमारजी बांरा ने एवं बांसवाडा का परिचय जिला प्रभारी श्री रीतेशजी जैन डडूका ने दिया।

कार्यक्रम के दौरान कोटा संभाग द्वारा तैयार किये गये दीपावली पर्व पर पटाखे नहीं फोडने की प्रेरणा देनेवाले पोस्टर का विमोचन श्री प्रेमचन्दजी बजाज एवं श्री ज्ञानचन्दजी जैन कोटा ने किया ।

सभा का संचालन राज.प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर ने किया।

दोपहर में द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. उत्तमचन्दजी भारिल्ल ने की। विशिष्ट अतिथि श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर मंचासीन थे।

मुख्य वक्ता फैडरेशन के राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने संगठन को मजबूत करने के लिये उपस्थित कार्यकत्ताओं के मध्य अपनी ओजस्वी शैली में संगठनोपयोगी मार्मिक सूत्र रखे। जिसे सभी कार्यकर्त्ताओं ने मनोयोग से सुना एवं उसके अनुसार अपने संगठन को चलाने के लिये दृढ संकल्प लिया।

इस सत्र में जयपुर जिला प्रभारी पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ ने जयपुर की, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री ने उदयपुर की, पण्डित रतनचन्दजी शास्त्री ने कोटा की, श्री शशिभूषणजी ने अलवर की एवं पण्डित रितेशजी शास्त्री ने बांसवाड़ा क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

संचालन प्रदेश महामंत्री पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाडा ने किया।

कार्यक्रम के पश्चात् सभी पदाधिकारियों द्वारा अतिशय क्षेत्र केशवराय पाटन एवं मुमुक्षु आश्रम की यात्रा की गई। सभी को डॉ. भारिल्ल की हीरक जयन्ती वर्ष के अवसर पर घडी लगा हुआ उनका कटाउट भेंट दिया गया।

कार्यक्रम का आयोजन अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन कोटा संभाग ने किया। **ह्न विक्रान्त जैन कोटा**

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार 32

सातवाँ प्रवचन

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

जैनदर्शन की जैनेतर दर्शनों से तुलना करते हुए पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं कि जैनदर्शन में वीतरागता को धर्म कहा है और अन्य अनेक दर्शनों में रागभाव (शुभराग) में धर्म बताया गया है। जैनदर्शन कहता है कि **होता स्वयं जगत परिणाम** पर ईश्वरवादी कहते हैं कि इस जगत की रचना सर्वशक्तिमान ईश्वर ने की है।

ये दार्शनिक मुद्दे हैं, जिनमें मतभेद हैं; पर अहिंसा, सत्य, अस्तेय ह्न ये सदाचार संबंधी बातें हैं; जो सभी में एक जैसी पाई जाती हैं; क्योंकि हिंसा, झूठ, चोरी को कौन भला कह सकता है ?

हिंसा, झूठ, चोरी को तो सरकार भी बुरा कहती है। यदि आप ये कार्य करेंगे तो सरकार आपको रोकेगी, शक्ति से रोकेगी।

सदाचार संबंधी एकता के आधार पर दर्शनों को एक नहीं माना जा सकता। दर्शन और धर्म हमारी निधि है, हमारी संस्कृति के अंग हैं, हमारी विकसित सभ्यता के प्रमाण हैं। इनकी उपेक्षा करके हम अपना सब कुछ खो देंगे। दर्शनों की विभिन्नता हमारी संस्कृति के गुलदस्ते हैं, हमारी सहिष्णु सभ्यता के जीवन्त प्रमाण हैं, विभिन्नता में एकता और एकता में विभिन्नता भारतीय मिट्टी की सुगंध हैं। इसे नष्ट करके हम नहीं बच सकते। देश का विकास, गरीबों का उद्धार आदि सुनहरे नारे तो सभी राजनैतिक पार्टियाँ देती हैं, पर उनकी मूल विचारधाराओं में भारी अन्तर देखने में आता है; अन्यथा ये वामपंथी-दक्षिणपंथी एक क्यों नहीं हो जाते ?

जब वामपंथी और दक्षिणपंथी एक नहीं हो सकते हैं तो सभी दर्शन एक कैसे हो सकते हैं ? क्या राजनैतिक विचारधाराओं की विभिन्नता देश में कम झगड़े कराती है ? झगड़ा मिटाने के लिए पहले उन्हें एक कर दीजिये, फिर दर्शनों के बारे में सोचना।

चुनाव भाषणों में देश की एकता के लिए यह क्यों नहीं कहा जाता कि सभी पार्टियाँ एक ही हैं; क्योंकि सभी देश का विकास चाहती हैं, सभी गरीबों का उद्धार करना चाहती हैं। यदि उन्हें इस आधार पर एक नहीं किया जा सकता तो फिर दर्शनों को एक कैसे किया जा सकता है ?

एक भी राजनैतिक पार्टी यह मानने के लिए तैयार नहीं है कि वह चुनाव प्रचार में यह कहे कि हम सब एक हैं; क्योंकि हम सभी आपकी भलाई चाहते हैं। वहाँ तो सभी अपनी रीति-नीति कार्यप्रणाली की उपयोगिता ही बताते हैं; पर धर्म की चर्चा में यह कहने में भी डर लगता है कि हमारी दार्शनिक मान्यता ही सत्य है।

मेरे उक्त चिन्तन पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। पण्डित टोडरमलजी तो साफ-साफ कहते हैं कि हम अपनी बात भी कहेंगे, उसे सत्य भी सिद्ध करेंगे; पर किसी से झगड़ा नहीं करेंगे।

यदि सामनेवाला फिर भी झगड़ा करेगा तो हम चुप रहेंगे; उसकी बात का उत्तर नहीं देंगे, पर अपनी बात कहना भी बंद नहीं करेंगे।

यह मोक्षमार्गप्रकाशक का सार उन लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है, जो जैन हैं; जैनदर्शन में जिनकी पूर्ण आस्था है। अत: उनके समक्ष अन्य दर्शनों की मीमांसा करना आवश्यक नहीं है। उदाहरण के तौर पर हम कह सकते हैं कि जब यहाँ बैठा कोई व्यक्ति ईश्वर को जगत का कर्ता-धर्ता मानता ही नहीं है तो फिर उसके सामने यह प्रस्तुत करने की क्या आवश्यकता है कि ईश्वर जगत का कर्ता-धर्ता नहीं है।

इसप्रकार जैनेतर मतों की समीक्षा पर अधिक बोलना-लिखना न तो आज के युग की परिस्थितियों के अनुकूल है और न इसकी विशेष आवश्यकता हमारे श्रोताओं और पाठकों को ही है। जिन लोगों को विशेष जिज्ञासा हो, वे लोग मूल ग्रन्थ का गहराई से स्वाध्याय करें।

इस अधिकार में जैनदर्शन की प्राचीनता सिद्ध करते हुए जैनेतर ग्रन्थों के अनेकानेक उद्धरण प्रस्तुत किये हैं; जो जैनदर्शन की प्राचनीता को तो सिद्ध करते ही हैं; साथ में पण्डितजी के जैन और जैनेतर ग्रन्थों के गंभीर अध्ययन को भी प्रस्तुत करते हैं।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इस ग्रंथ मोक्षमार्ग प्रकाशक में विभिन्न प्राचीनतम भाषाओं में लिखे विभिन्न दर्शनों के महाभारत जैसे विशाल ६७ ग्रन्थों के सैकड़ों उद्धरण दिये गये हैं; जिनमें प्राचीनतम ग्रंथ वेदों के उद्धरण भी शामिल हैं।

उक्त ६७ ग्रन्थों में ३८ ग्रंथ तो जैनेतर भारतीय दर्शनों के ग्रन्थ हैं तथा १९ जैन ग्रन्थ हैं। इन ग्रन्थों की सूची मेरे शोध ग्रंथ 'पण्डित टोडरमल : व्यक्तित्व और कर्तृत्व' के पृष्ठ ३०-३१ पर दी गई है।

पण्डित टोडरमलजी के काल में ग्रन्थों की मुद्रण व्यवस्था नहीं थी। सभी ग्रंथ हस्तलिखित प्रतियों में ही प्राप्त होते थे। इसकारण उनकी उपलब्धता अत्यन्त कठिन थी। हमारी समझ में ही नहीं आता कि उन्होंने इतने ग्रन्थ कहाँ से और कैसे उपलब्ध किये थे।

वे कोई करोड़पति सेठ तो थे नहीं। उन्हें अपनी आजीविका के लिए जयपुर छोड़कर लगभग १५० किलोमीटर दूर सिंघाणा जाना पड़ा था। वहाँ वे एक साहूकार के यहाँ मुनीमी का कार्य करते थे। ऐसी परिस्थिति में ग्रंथों की उपलब्धता और भी कठिन हो जाती है।

उस जमाने में लोगों के घरों में तो शास्त्रों के उपलब्ध होने का कोई सवाल ही नहीं उठता, मंदिरों के शास्त्रभण्डारों में ही शास्त्र

उपलब्ध होते थे। वे भी एक-एक, दो-दो प्रतियों में। उन्हें घर ले जाना संभव नहीं था, मंदिर में बैठकर ही उनका स्वाध्याय करना पड़ता था।

पठन-पाठन की कोई विशेष व्यवस्था नहीं थी ह्न ऐसी परिस्थितियों में इतने महान ग्रन्थों का इतना गहरा अध्ययन; उनकी प्रतिभा, निष्ठा, धर्मप्रियता और करुणाभाव को प्रदर्शित करता है।

जैन मान्यतानुसार तो जैनदर्शन अनादि से है। तीर्थंकर जैनदर्शन के प्रवर्तक नहीं, प्रचारक हैं। जैनेतर ग्रन्थों के आधार पर भी यह सिद्ध होता है कि जैनदर्शन सभी दर्शनों में प्राचीनतम दर्शन है। यह जानने के लिए पाँचवें अधिकार के इस प्रकरण का अध्ययन गहराई से अवश्य करना चाहिए।

जैनधर्म की प्राचीनता को सिद्ध करनेवाले इस प्रकरण के अध्ययन और प्रचार-प्रसार करने की सर्वाधिक आवश्यकता है; क्योंकि आजकल जैनेतर लोगों में यह प्रचार बड़े पैमाने पर हो रहा है कि बौद्धधर्म भगवान बुद्ध ने चलाया और उसी समय जैनधर्म की स्थापना भगवान महावीर ने की थी। इस भ्रामक प्रचार के निषेध के लिए यह अत्यन्त उपयोगी प्रकरण है। इस दृष्टि से इस प्रकरण का पठन-पाठन अवश्य होना चाहिए।

लगभग सभी प्राचीनतम जैनेतर भारतीय साहित्य में, यहाँ तक कि वेदों में भी जैनधर्म के उल्लेख पाये जाते हैं; इससे सहज ही यह सिद्ध होता है कि जैनदर्शन वेदों से भी पहले का तो है ही।

आपको यह जानकर भी सुखद आश्चर्य होगा कि अब तक प्राप्त प्राचीन मूर्तियों के अवशेषों में सबसे प्राचीन अवशेष जैनमूर्तियों के ही हैं।

यहाँ एक प्रश्न संभव है कि एक ओर तो पण्डित टोडरमलजी यह कहते हैं कि जिनमें विपरीत निरूपण द्वारा रागादि का पोषण किया गया हो, उन शास्त्रों का पढ़ना-पढ़ाना गृहीत मिथ्याज्ञान है और दूसरी ओर उन्होंने स्वयं जैनेतर साहित्य का इतना अध्ययन किया। इस विरोधाभास का क्या कारण है ?

अरे, भाई ! आपने पण्डितजी द्वारा लिखी गई गृहीत मिथ्याज्ञान की परिभाषा को ध्यान से नहीं पढ़ा। उसमें अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि जिनमें विपरीत निरूपण द्वारा रागादि का पोषण किया गया हो; उन शास्त्रों को 'श्रद्धानपूर्वक' पढ़ना-पढ़ाना गृहीत मिथ्यात्व है।

इसमें आपने 'श्रद्धानपूर्वक' शब्द पर ध्यान नहीं दिया। इसकारण ही यह प्रश्न उपस्थित हुआ है।

जैनेतर शास्त्रों के पढ़ने का निषेध नहीं है। यदि उनके पढ़ने का सर्वथा निषेध करेंगे तो न केवल पण्डित टोडरमलजी, अपितु न्यायशास्त्र के उन सभी आचार्यों पर भी प्रश्नचिन्ह लग जावेगा; जिन्होंने स्वमत मण्डन और परमत खण्डन संबंधी ग्रन्थों की रचना की है; क्योंकि जैनेतर ग्रन्थों के अध्ययन के बिना तो यह कार्य संभव ही नहीं था। आचार्य अकलंकदेव तो दीक्षा से पहले बौद्धों के विद्यालयों में बौद्धदर्शन का गहरा अध्ययन करने के लिए गये थे।

यदि ऐसा है तो आप यह प्रेरणा क्यों देते हैं कि यहाँ-वहाँ के साहित्य को पढ़ने में समय खराब मत करो; उन आध्यात्मिक शास्त्रों का स्वाध्याय करो कि जिनमें राग का पोषण नहीं है और उस शुद्धात्मा का स्वरूप समझाया गया है; जिसके दर्शन का नाम सम्यग्दर्शन, जानने का नाम सम्यग्ज्ञान और जिनमें जम जाने, रम जाने का नाम सम्यक्चारित्र है।

अरे, भाई ! यह बात उनके लिए कही जाती है; जिनके पास समय बहुत कम है। जो लोग या तो वृद्धावस्था के नजदीक पहुँच गये हैं या फिर धंधे-पानी में उलझे हुए हैं; उन लोगों के पास जो भी थोड़ा-बहुत समय है या उनमें से जो लोग थोड़ा-बहुत समय निकालते हैं; उन्हें उन्हीं शास्त्रों का स्वाध्याय करना चाहिए कि जिनमें सीधी आत्महित की ही बात हो।

जिसप्रकार यद्यपि छात्रों को पाठ्यक्रम के बाहर की पुस्तकों के पढ़ने का निषेध नहीं है; तथापि परीक्षा निकट हो और छात्र पढ़ाई में कमजोर हो तो उससे कहा जाता है कि यहाँ-वहाँ की पुस्तकें पढ़ने में समय बर्बाद मत करो, पाठ्यक्रम की किताबों को ही मन लगाकर पढ़ो; उसीप्रकार यद्यपि जैनेतर शास्त्रों के पढ़ने का निषेध नहीं है; तथापि यहाँ जिन लोगों को धार्मिक ज्ञान अल्प है, जिनके पास समय भी कम है, जिनका बुढ़ापा नजदीक है; उन लोगों को यह कहा जा रहा है कि प्रयोजनभूत तत्त्वों के प्रतिपादक शास्त्रों का ही स्वाध्याय करो, यहाँ-वहाँ मत भटको।

जिन लोगों ने सम्पूर्ण जीवन ही जिनागम के स्वाध्याय के लिए समर्पित कर दिया है; अत: जिनके पास समय की कोई कमी नहीं है; उन लोगों को न्याय, व्याकरण के साथ-साथ जैनेतर दर्शनों का भी ज्ञान अर्जित करना चाहिए। इससे उनके ज्ञान में तो निर्मलता आती ही है; वे आचार्यों की बातों को किसी के दूसरे के सहयोग के बिना समझ सकते हैं। न्यायशास्त्र में निपुण होने से प्रयोजनभूत तत्त्वों को भी तर्क की कसौटी पर कसकर सम्यक् निर्णय कर सकते हैं। स्वयं के हित के साथ-साथ परहित में भी निमित्त बन सकते हैं, जिनवाणी की सुरक्षा में भी सहयोग कर सकते हैं।

हम हमारे यहाँ अध्ययन करनेवाले छात्रों को व्याकरण, न्याय एवं अन्य दर्शन के ग्रन्थों का भी अध्ययन कराते हैं; पर मुख्यता जिन-अध्यात्म की ही रखते हैं। ●

17 जुलाई 2009, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

32 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

हार्दिक आमंत्रण

जयपुर (राज.) : श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी 32 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर रविवार, दिनांक 26 जुलाई से मंगलवार, दिनांक 4 अगस्त 2009 तक आयोजित होने जा रहा है।

इस महामांगलिक प्रसंग पर बाबू जुगलकिशोरजी युगल कोटा (प्रयत्न चल रहा है), डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन सोनागिरि, ब्र.यशपालजी जैन, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित प्रकाशचन्दजी छाबड़ा इन्दौर आदि अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

इस अवसर पर सभी साधर्मियों को पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

बाल शिक्षण शिविर सम्पन्न

चैतन्यधाम (गुज.) : धर्मरत्न पण्डित श्री बाबूभाई चुन्नीलाल मेहता अभिनंदन स्मृति तत्त्वज्ञान प्रचार-प्रसार ट्रस्ट एवं श्री अंतर्राष्ट्रीय दिगम्बर जैन मुमुक्षु महासंघ के संयुक्त तत्त्वावधान में श्रीमती कंचनबेन भगवानदास छगनलाल जैन, नरोडा अहमदाबाद के सौजन्य से दिनांक 17 मई से 24 मई 2009 तक चैतन्यधाम में उन्नीसवां बाल शिक्षण-शिविर अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ।

शिविर में पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित दीपकभाई कोटडीया अहमदाबाद, पण्डित ऋषभजी अहमदाबाद, पण्डित अमितजी कोटा, पण्डित विशेषजी जयपुर, पण्डित राहुलजी सेमारी, वि. स्वस्तिजी देवलाली, ब्र. चेतनाबेन, ब्र. ललिताबेन, ब्र. संगीताबेन देवलाली, ब्र. आरतीबेन छिंदवाडा आदि का लाभ मिला। शिविर के मध्य बच्चों को धार्मिक पाठ्यक्रम के साथ जिनेन्द्र वंदना, पूजन अभिषेक, गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन (छहढाला), कहान क्रमबद्ध कथा, प्रथमानुयोग की कहानियों एवं विविध प्रतियोगिताओं के माध्यम से संस्कारों का सिंचन कराया गया।

शिविर में पूरे गुजरात के विभिन्न नगरों से 260 बच्चों ने लाभ लिया। सभी बच्चों को इनाम देकर प्रोत्साहित किया गया। अगले वर्ष के 20 वें शिक्षण शिविर की घोषणा श्रीमती कुसुमबेन देवेन्द्रकुमार शकरालाल शाह के द्वारा की गई।

आगामी कार्यक्रम...

श्री टोडरमल स्मारक भवन के नवीनीकृत प्रवचन मण्डप का उद्घाटन समारोह

1. **जयपुर :** श्री टोडरमल स्मारक भवन के मुख्य प्रवचन मण्डप के नवीनीकरण का कार्य विगत 5 महिनों से चल रहा था; जो कि अब अपनी पूरी साज-सज्जा के साथ बनकर तैयार हो चुका है। नवीनीकृत इस सुन्दर विशाल प्रवचन मण्डप का शुद्धिकरण एवं उद्घाटन समारोह आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर के पूर्व दिनांक 25 जुलाई, 2009 को किया जा रहा है।

इस अवसर पर प्रात: नित्य-नियम पूजन एवं शांतिविधान के पश्चात् बाबूभाई सभागृह में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन का लाभ मिलेगा, तदुपरान्त मुख्य प्रवचन हॉल का विधिवत् उद्घाटन किया जायेगा।

शांतिविधान का आयोजन श्रीमती सूरजदेवी-जमनालाल कैलाशचन्द प्रकाशचन्द चेतनलाल रतनलाल सेठी परिवार लाल कोठी जयपुर द्वारा किया जा रहा है।

प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्रीमती शशि-प्रकाशचन्द, अमित, विवेक सेठी परिवार जयपुर के करकमलों से किया जायेगा ।

आप सभी से इस मांगलिक अवसर पर पधारने का निवेदन है।

मुक्त विद्यापीठ के विद्यार्थी ध्यान दें !

मुक्त विद्यापीठ, जयपुर के पाठ्यक्रमों का नवीन सत्र शीघ्र प्रारंभ हो रहा है। आवेदन की अंतिम तिथि 31 अगस्त 2009 है।

स्पष्टीकरण

समन्वयवाणी (पाक्षिक) के दिनांक 16 से 31 मई को प्रकाशित 10वें अंक में छपे लेख 'आत्मार्थियों के गढ में....का खेल' के विचारों से हम सहमत नहीं है एवं उससे हमारा कोई संबंध नहीं है।

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, महामंत्री – पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

प्रकाशन तिथि : 13 जुलाई 2009

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127